

रूहानी सोशल वर्कर



समाज को आकार देने के लिए सरकार बनाई जाती है, और सरकार स्थूल रूप से अलग-अलग माध्यमों से हर एक चीज को आकार देती है। जिसमें अलग-अलग तरह के समाज के जो पहलू हैं वो एक तरह से आप कह सकते हैं कि उनको बल मिलता है। सारे पहलुओं को एक साथ पिरोने के लिए इतने सारे संस्थायें एक साथ जुड़कर काम करती हैं। जिससे उन पहलुओं को चार चांद लगाया जाता है। उन पहलुओं पर काम किया जाता है, लेकिन जब व्यक्ति को रोटी भी चाहिए, कपड़ा भी चाहिए, मकान भी चाहिए, दुकान भी चाहिए। बहुत सारी ऐसी चीजों की जब जरूरतें पड़ती हैं तो उसकी खानापूर्ति के लिए वो काम करता है। मतलब

जो कार्य निःस्वार्थ भाव से समाज के हित के लिए होगा उसके अन्दर कमाने का भाव पैदा होता है वैसे ही उसके अन्दर विकृति पैदा होनी शुरू हो जाती है।

समाज में उन्नति के लिए सब लोग कहते हैं कि अगर, घोड़ा घास से दोस्ती कर लेगा तो खायेगा क्या! लेकिन इतना उल्टा ब्यान है इस ब्यान को थोड़ा सीधा देखो कि घोड़े की घास से दोस्ती है तो अच्छे से खायेगा ना! बल्कि वो उस बात का वायब्रेशन कितना सुन्दर होगा। लेकिन अगर उसे पता चल जाय कि ये व्यक्ति मेरे पास सिर्फ और सिर्फ लोभवश, मोह वश जुड़ा हुआ है। लोभ वश खासकर जुड़ा हुआ है तो उस व्यक्ति के वो व्यक्ति कितने दिन तक साथ

में रह पायेगा! तो सारे स्लोगन लोगों ने अलग-अलग तरीके से यूज किये हैं। मतलब उसमें भी स्वार्थ छिपा हुआ है। काम के पीछे भी और काम न करने के पीछे भी। इसका जो सबसे प्रबल कारण है वो ये कि शायद आज मनुष्य इस अंधी दौड़ में उन पहलुओं को दरकिनार कर बैठा है जो हमारे लिए जरूरी है। आपको पता हो कि जो पहलू सबसे ज्यादा मायने रखता है हमारे लिए वो है आध्यात्मिक पहलू। जिसमें व्यक्ति शारीरिक रूप से कार्य तो कर रहा है, लेकिन जो मानसिक रूप से विकसित न हो, मानसिक रूप से स्वस्थ न हो तो उसके लिए आध्यात्मिकता बहुत जरूरी है। तो कहा जाता है कि समाज में जो सामाजिक

कार्यकर्ता हैं, जो समाज को कुछ देने के लिए अपना कार्य कर रहे हैं उन लोगों के अन्दर किसी भी तरह का भेदभाव, किसी भी तरह का तनाव नहीं हो सकता। अगर तनाव है, भेदभाव है तो जिस कार्य के वो निमित्त हैं उसके अन्दर भी तरंगों का प्रभाव होता है, वायब्रेशन सही नहीं होते। सबकुछ वैसे काम नहीं करेगा जैसे वो करना चाहता है। तो अगर कोई ट्रस्टी है, अगर कोई समाज को कुछ देना चाहता है, समाज के साथ कार्य करना चाहता है, समाज के साथ जुड़ना चाहता है तो उसको किसी भी तरह का तनाव नहीं हो सकता। अगर तनाव है तो ज़रूर नाम-मान-शान और सम्मान का भाव है। तो जब हम शांत मन से, सुखी मन से, पवित्रता के भाव से, भाव शब्द को आपको यहाँ पकड़ना है। इस भाव से जब हम कार्य करते हैं तो उसमें रूहानियत भर जाती है। और उस रूहानियत की खुशबू से हरेक आत्मा बड़ी तृप्त होती है। जैसे आपने मार्केट में कोई प्रोडक्ट बनाया लेकिन बड़े ही शांत भाव से बनाया कि ये जहाँ भी जायेगा तो इसे लोग बड़ी शांति से यूज करेंगे। इससे सुख लेंगे मतलब मैं सुखदाई भाव से कोई चीज बना रहा हूँ तो उसमें सुख, शांति, प्रेम, पवित्रता भी जा रहा है। और जहाँ-जहाँ उस प्रोडक्ट को लोग यूज करेंगे जिस कार्य के आप निमित्त होंगे, अगर कोई मकान बना रहा है कुछ भी ऐसा काम कर रहे हैं तो उसमें भी वो वाले वायब्रेशन पड़ जायेंगे। और उसमें जो रहेगा उसमें वो रूहानियत फील करेगा। इसलिए हम सभी रूहानी सोशल वर्कर क्यों न बनें। सोशल वर्कर भी हो जायेगा, रूहानियत भी उसमें शामिल हो जायेगी। दोनों के सम्मेलन से समाज कितना

स्वस्थ और सुन्दर होगा। इस स्वस्थ और सुन्दर समाज की परिकल्पना पर मात्मा हमसे कर रहे हैं और कह रहे हैं कि



डॉ. अ. कु. अनुज भाई, दिल्ली

आप ही इसको साकार कर सकते हो। तो साकार करने के लिए चाहे वो दुनिया की सामाजिक संस्थायें हों या फिर कोई भी ऐसी गवर्नमेंट की संस्था हो। सभी ऐसी संस्थाओं को इसके साथ कार्य करने से हमको जल्दी सफलता मिलेगी और हम जो चाहते हैं वो कर भी लेंगे। समय की मांग है कि हम सभी, सभी को शक्ति दें, प्रेम दें, स्नेह दें, निःस्वार्थ भाव से सेवा करें ये है शांति और सुखमय संसार बनाने का आधार। और यही सच्चाई से एक सोशल वर्क कहा जायेगा जिसमें हम सभी को वो दें जो उनको कभी नहीं मिलता। जैसे कहीं कोई कार्य करने जाता है किसी ऑफिस में जाता है तो वहाँ भी उसको झिड़क मिल रही है, डांट मिल रही है। प्यार नहीं मिल रहा है। एक तरह से व्यक्ति मशीन की तरह काम कर रहा है। घर आता है फिर जाता है। उसको लगता है कि शायद यही जीवन है, लेकिन अगर उसमें शांति, सुख और प्रेम नहीं है तो पैसा और रूतबा किस काम का! इसीलिए हम सबको रूहानी सोशल वर्कर बनने की जरूरत है। जहाँ हर चीज एक साथ एक दुकान पर मिल जाती है। तो आओ चलें इस दौड़ में हम शामिल हो जायें!

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दे



प्रश्न : मेरा नाम विन्मयी है। मैं 38 वर्ष की हूँ। मेरी कोई संतान नहीं है। मेरे पास एक बाल गोपाल है मतलब कृष्ण की मूर्ति है। मैं उसे अपना बच्चा मानती हूँ। कुछ बोलते हैं कि बाल गोपाल होने की वजह से मेरा कोई बच्चा नहीं हो रहा है। क्या ये सच है? डॉक्टर को भी दिखाया तो वो भी कुछ कहते नहीं हैं। एक महीने से मैं रोज़ राजयोग का अभ्यास कर रही हूँ। मुझे इस स्थिति को थोड़ा-सा स्पष्ट करके बतायें।

उत्तर : बाल गोपाल घर पर रखने से, उसे अपना बच्चा मानने से बच्चा नहीं हो रहा है ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है। बच्चा नहीं हो रहा है ये कोई शारीरिक कारण भी हो सकता है। आजकल मेडिकल बहुत आगे जा चुकी है। असम्भव को सम्भव कर देती है। जो करना उचित हो वो तो आपको करना ही चाहिए, लेकिन आप बाल गोपाल को अपना बच्चा मानती हैं ये भी सुन्दर बात है। अभी आप एक मास से राजयोग का अभ्यास कर रही हैं तो आप अच्छे से समझ ही गयी होंगी कि हमें भगवान से ही सारे सम्बन्ध जोड़ने हैं। वो हमारा सखा भी है, प्रियतम भी है, परमपिता भी है, परमशिक्षक, परमसद्गुरु भी है, वो सच्चा मित्र भी है, खुदा दोस्त भी है। जो भी नाता हम उससे जोड़ना चाहें वो नाता हम जोड़ सकते हैं। इसलिए अपने परमपिता को जो निराकार सत्ता है राजयोग में सिखाया जाता है उसको ही अपना बच्चा बना लें। और भगवान जिसका बच्चा बन जाये तो उसका जीवन तो आनंद से भर जायेगा। और वो ऐसा बच्चा है जो सदा साथ देगा। ऐसे बहुतों के अनुभव हो चुके हैं। वो मुक्तिधाम में भी ले जायेगा और जीवनमुक्तिधाम में भी। हम मानते हैं कि एक माँ के लिए उसका बच्चा होने की खुशी क्या होती है। उसके लिए वो ही सबकुछ होता है। अगर वो भी हो तो बहुत अच्छा और न हो तो भगवान को ही अपना बच्चा बना लें तो वो ही सब सुख प्रदान करने लगता है।

प्रश्न : मैं एक कुमार हूँ और मन खाली-सा रहता है। इस कारण से उमंग-उत्साह कम रहता है। मन बाबा के सिवाए कहीं ओर न लगे हमेशा उन्हीं के साथ रहूँ, हमेशा कम्बांड रहूँ इसके लिए मैं क्या पुरुषार्थ करूँ?

उत्तर : ये कुमार और कुमारियों को ये खालीपन और अकेलापन भासता अवश्य है और इसका बिल्कुल सूक्ष्म कारण जाना जाये तो ये होती है अन्दर की सूक्ष्म इम्प्युरिटी (अपवित्रता)। ये जो एज होती है मनुष्य के युवाकाल की, इसमें वासनायें भी फूल फोर्स से काम करती हैं। और जब वो तृप्त नहीं होती तो मनुष्य को खालीपन लगता है। किसी को डिप्रेशन में ले जाती है, किसी को अकेलेपन की फीलिंग होती है। किसी

को खुशी नहीं होती। सबकुछ तो अच्छा है, कोई कारण ही नहीं है पर मन प्रसन्न नहीं है ऐसी फीलिंग युवाकाल में हार्मोनल चेंजेस होने के कारण कुछ लोगों को होती है। ऐसे में आप ईश्वरीय महावाक्यों का अध्ययन करके चिंतन कर लिखना प्रारम्भ करें। जैसे खुश रहने के बीस प्वाइंट्स। शक्तिशाली बनने की दस प्वाइंट्स, अपने जीवन को स्पिरिचुअलिटी से भरने के लिए दस सिद्धांत। तो आपको बहुत जरूरत है ज्ञान चिंतन की। ईश्वरीय ज्ञान में मुझे क्या-क्या मिला। इस संगमयुग पर मैंने क्या-क्या देखा तो इससे

मन की बातें

- राजयोगी ब्र. कु. सूर्य



मन आनंदित रहेगा। जरूरत इस चीज की होती है युवकों को कि वो ज्ञान का चिंतन करें इससे मन आनंदित रहेगा। आनंद खुशी से भी बहुत बड़ी चीज है और ये खालीपन आपका सदा के लिए समाप्त हो जायेगा। अगर आध्यात्मिक मार्ग में न हो तो ये मार्ग कहीं न कहीं कठिन प्रतीत होता है।

प्रश्न : मैं 28 साल का एक कुमार हूँ। हम दो भाई मिलकर तीव्र पुरुषार्थ का प्लान तो बहुत बनाते हैं लेकिन प्रैक्टिकल में ला नहीं पाते। अमृतवेला हमारा रोज़ मिस होता है। मुरली में रोज़ सुनता हूँ लेकिन मैं उसका रस नहीं ले पाता हूँ। कृपया कुछ समाधान बतायें।

उत्तर : हमारे जो पुरुषार्थ के प्लान हैं उसके लिए एक शब्द याद रखेंगे सिम्पल एंड प्रैक्टिकल। हम ऐसा प्लान न बनायें जो दो ही दिन किया जाये। हम ऐसा सिम्पल और छोटा-सा प्लान बनायें जो लम्बे काल तक चले। मुरली सुनने के कई अच्छे तरीके हैं। मुरली को एंजॉय करने का एक तो पहला तरीका ये अपना लें कि स्वयं भगवान मुझ आत्मा से बातें कर रहा है। मुझे कुछ स्मृतियाँ दिला रहा है। मुझे कुछ कह रहा है। मेरी सोई शक्तियों को जगा रहा है। मेरी सोई हुई चेतना को जागृत कर रहा है। ये साथ-साथ फील करें और अपने को उस जागृति में लाते रहें। इससे सवरे का महावाक्य सुनने का जो समय है ये सचमुच हमारे लिए एक वरदान बन जायेगा। और जो एनर्जी आपको इससे मिलेगी वो सारा दिन चलेगी। दूसरी बात आपको

मुरली के अच्छे-अच्छे प्वाइंट्स लिख लेने चाहिए। चाहे आप ऐसा करें कि मुरली ध्यान ये सुनें और मुरली के बाद 15 मिनट निकालकर आप उसका सार लिखें कि आज मुरली में शिव बाबा ने क्या कहा? तो इस अटेंशन से जब आप मुरली सुनें तो मुरली आपके लिए एक बहुत सुन्दर रस बन जायेगी। ज्ञान का चिंतन आपको शक्ति प्रदान करने लग जायेगा। इससे आपकी मेमोरी पॉवर भी अच्छी बड़ेगी। और आप सारा दिन उमंग-उत्साह में रहेंगे। हम तीव्र पुरुषार्थ के प्लान बनाने की बात कर रहे थे तो जैसा हम सप्ताह का पुरुषार्थ सबको भेजते हैं तो ऐसा एक श्री प्लान आप लोगों को सप्ताह के लिए या पंद्रह दिन के लिए बना लेना चाहिए। ये नहीं कि मैं अभी आठ घंटे योग कर लूंगा। ऐसा नहीं मुझे अपने योग का चार्ट सारे दिन में दो घंटे करना है। मुझे आज पांच बार सभी को आत्मिक दृष्टि से देखना है। आज मुझे स्वमान का ये अभ्यास दस बार करना है। और रात को अपने को मार्क्स दे दिया जाये कि 100 में से मैं अपने को इतने मार्क्स देता हूँ। पंद्रह दिन के बाद फिर चेंज कर दें। नई-नई प्वाइंट्स मिलती रहेंगी। तो एक सिम्पल और प्रैक्टिकल प्लान बनायें। ये भी न सोचें कि मुझे 2 बजे उठना है बाबा ने कहा है कि जो महायोगी हैं वो तो 2 बजे उठते हैं। आप चार बजे ही उठें। क्योंकि युवकों को अच्छी नींद की भी जरूरत होती है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

